गूँगी चीख ...

● **महरौनी, 23-8-2000**

एक बार ब्रह्मा जी के मन में आया, कि चलो मर्त्यलोक की यात्रा करना चाहिये। वहाँ के दु:खी जीवों के दु:खों को दूर करना चाहिये। ऐसा विचारकर उन्होने सम्पूर्ण मर्त्यलोक की यात्रा की, और पाया कि यहाँ पर संसार का प्रत्येक प्राणी अत्यंत दु:खी है, कष्टों में है।

यह देखकर उनके मन में दु:खों से मुक्त करने का विचार बन गया। उन्होंने देखा कोई शरीर से दु:खी है, तो कोई मानसिक दुखी है, तो कोई धन में धन में दुखी है। यह देखते हुये वे मथुरा नगरी पहुँचे और देखा कि यहाँ के राजा कंस ने प्रजा पर बड़ा अत्याचार कर रखा है। अपने माता-पिता को नगर-द्वारा पर कैद कर रखा है, और यदि इसका उपाय न सोचा गया, तो आगामी समय में माता-पिता के ऊपर पुत्रों द्वारा अत्याचार का मामला बहुत आगे बढ़ जायेगा। यह तो घोर अत्याचार हो गया। इस भीषण अत्याचार को देखकर दु:खित ब्रह्मा जी वापिस ब्रह्मालोक को चले गये।

ब्रह्मा जी अपना आप में अत्यन्त चिंतित थे। उन्हें चिंता मगन देखकर उर्वशी तिलोत्तमा ने उनसे पूछा-स्वामिन् जबसे आप मर्त्य लोक की यात्रा करके वापिस लौटै हो, तभी से आप अत्यन्त चिंतित नजर दिखाई देते हो। आखिर क्या बात है? ऐसी कौन सी समस्या है, कि आप इतने चिंतामग्न हो? आपके चहरे पर अब वह पहले जैसी खुशी दिखाई नहीं देती। स्वामिन् आप हमें अपने मन की सारी बात बताने कृपा करें, तो हमारे लिये बड़ी खुशी होगी। ब्रह्माजी ने कहा-देवी तुमने बिल्कुल ठीक जाना। मैं जब से मर्त्यलोक की यात्रा

करके वापिस लौटा हूँ। मर्त्यलोक में रहने वाले लोगों को देखकर, उनकी पीड़ा, उनके कष्ट, उनके दुःखों को देखकर अत्यंत चिंतित हूँ कि कैसे उनका दुःख दूर किया जाये? कैसे उनकी पीड़ा, कष्ट का अंत किया जाय? तिलोत्तमा ने कहा- स्वामिन् इसमें इतने चिंतित होने की क्या बात है। आप अभी अपने दूत से विष्णु और महेश को बुलाकर उनसे सलाह, मशविरा कर लीजिये। आपको जरूर ही कोई न कोई उपाय प्राप्त हो जायेगा। ब्रह्माजी ने कहा-देवी तुम ठीक कहती हो। विष्णु के पास कोई न कोई उपाय जरूर होना चाहिये।

ब्रह्मा जी ने तुरंत अपने एक दूत को बुलाकर विष्णु के पास भेजा, एवं दूसरे दूत को बुलाकर शिव जी के पास भेजा। दोनों ही दूत उसी समय अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गये।

क्षीर सागर की धवल जल की उठती हुई धीमी-धीमी तरंगे, मंद-मंद चलती वायु, और नागशय्या पर लेटे हुये विष्णु जी अपनी देवी लक्ष्मी के साथ मधुर-प्रिय वार्तालाप कर रहे हैं। विष्णु जी कह रहें हैं, जब-जब धरती पर दुख और अत्याचार होते हैं, तो मैं वहाँ पर अवतार लेकर के दुःखी प्राणियों के दुःखों को दूर करता हूँ। लक्ष्मी से यह बात थोड़ी सहन न हुई। उन्होंने कहा अब मैं भी मर्त्यलोक के निवासियों का कष्ट पूर्णरूपेण दूर करूँगी। विष्णु जी ने कहा-देवी तुम्हारे द्वारा कष्ट दुर नहीं किया जा सकता, और लक्ष्मी बोली मैं भी कष्ट दूर कर सकती हूँ। मधुर वार्तालाप चल रहा था, कि इतने में विष्णु जी के चरणों में ब्रह्मा जी द्वारा भेजा गया दूत उपस्थित हो गया। दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम कर बोला-स्वामिन् आज आपके लिये ब्रह्मा जी ने याद किया है। विष्णु जी ने जैसे ही यह समाचार, यह संदेश सुना, तुरंत ही ब्रह्मा जी के पास जाने को तैयार हो गये। लक्ष्मी बोली स्वामिन् मैं भी आपके साथ चलना चाहती हूँ। विष्णु जी ने तथास्तु कह दिया।

उधर शिव जी के पास भी ब्रह्मा जी के दूत पहुँचा। शिव जी भी तुरंत ब्रह्म लोक की ओर प्रस्थान कर गये। ब्रह्म लोक में विष्णु

जी और शिव जी के पहुँचते ही ब्रह्मा जी ने यथा योग्य आसन पर अवस्थित किया।

विष्णु जी ने कहा-आज आपने हमारे लिये क्यों याद किया? ब्रह्मा जी ने कहा-अभी हमने एक दिन मर्त्यलोक की यात्रा का विचार करसम्पूर्ण मर्त्यलोक की यात्रा की। वहाँ जाकर हमने देखा कि हरर प्राणी, किसी न किसी कारण से दुःखी हैं। मथुरा नगरी में तो बड़ा ही अनर्थ हो गया। राजा कंस ने अपने ही माता-पिता को बंदी बनाकर नगर द्वार पर कैद कर दिया है। विष्णु मैंने कंस को बहुत ही अच्छा और नेक इंसान बनाकर भेजा था। यद्यपि जैन दर्शन ईश्वरवाद को स्वीकार नहीं करता। जैन दर्शन के अनुसार तो जो भी व्यक्ति जैसे कार्य करता है वह स्वयं की उसका फल पाता है अर्थात् स्वयं की कर्ता है, और स्वयं ही भोक्ता। आत्मा अपने परिणामों के अनुसार ही कर्मों को काटकर आत्मा से परमात्मा बनता हैं। लेकिन यह दृष्टान्त यहाँ मात्र समझने की दृष्टि से एवं अपने संस्कार व आचरण सुधारने की दृष्टि से प्रस्तुत कर रहा हुँ।

बालक की प्रथम गुरू होती है –माँ

विष्णु जी ब्रह्मा जी से बोले- हे ब्रह्मलोकपति। कंस ने जो किया, उसमें उसकी तो गल्ती हैं ही, लेकिन उससे भी ज्यादा यदि गल्ती है, तो उनके माता-पिता की। कंस के माता-पिता ने उसका पालन-पोषण नहीं किया जबकि माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वह अपने बालक को संस्कारित करें। उसे प्रेम प्यार दे, ममता भी निगाह से उसे देखें और उसकी दृष्टि को भी प्रेम से भर दे। क्योंकि बालक गीली मिट्टी की तरह हुआ करता है। बालक अभी मात्र गीली मिट्टी है। उसे कुम्हार जिस रूप में ढाल देता है वह उस रूप में हो जाता है। चाहे तो कुम्हार मिट्टी का दीप बना दें, जो स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को भी प्रकाशित कर सके। स्वयं जलकर भी दूसरों का भी

मार्ग प्रशस्त कर सके। और चाहे तो दीवार बना दें, जो दो व्यक्ति को भी न मिलने दे। बालक अभी कोरी स्लेट की तरह है। उसके अंदर ग्रहण करने की शक्ति तीव्र हुआ करती है, जो भी ग्रहण कराओगे ग्रहण कर लेगा। उसके हृदय पर गीत लिखोंगे तो, गीत की झंकार से दूसरों का दिल जीत लेगा और गाली लिखोगे तो, गाली से मार से दूसरों का दिल तोड़ लेगा। आपसी प्रीत को तोड़ देगा। स्वयं भी तिरस्कृत होगा और अपने कुल, परिवार को भी अपमानित करेगा। बालक तो नादान होता है, अंजान होता है। वह न माँ को जानता है न पिता को। न भाई को जानता है, न बहिन को। लेकिन जब उससे कहा जाता है कि बेटा ये माँ है, ये पिता हैं और धीरे-धीरे जब उसका परिचय कराया जाता है तो बालक को भी लगता है ये पिता हैं। हमें माता-पिता के पैर छुना चाहिये। सारा ज्ञान उस बालक को माता-पिता के द्वारा की दिया जाता है क्योंकि माँ को बालका की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। प्रथम गुरु तो उसकी माँ ही होती है। लेकिन यदि बालक को माँ का वात्सल्य नहीं मिल पाया, तो वह बालक जरूर ही बिगड़ जाता हैं क्योंकि उसको प्रथम गुरु की शिक्षा और प्रथम पाठशाला में प्रवेश नही मिला। इसलिये माता-पिता को अपने बालक की शिक्षा का उसकी सेवा-सुश्रुषा का एवं सद्संस्कार देने का पूरा ख्याल रखना चाहिये।

लेकिन वर्तमान की स्थिति कुछ बिगड़ गई है। आज माँ-बाप को अपने बच्चों के भावी जीवन के प्रति कोई रुझान नही रहा। माता-पिता के संस्कार ही बालक पर पढ़ते हैं, इसलिये माता-पिता को चाहिये कि वह अपने संस्कारों को पहले सम्यक् समीचीन सही बनायें। हमारे संस्कार इतने संयमित और सम्यक होना चाहिये। जिसे देखकर बालक भी वैसा बनने का प्रयास करें। क्योंकि बालक के अंदर ये गुण पाया जाता है वह जैसा देखता है वैसा ही बनने का प्रयास करता है।

डर्टी करेक्टर या ब्यूटी करेक्टर

बालक तो हृदय से दही के समान हुआ करता है, अर्थात् जैसे दही अत्यंत कोमल होता है, वैसे ही बालक का हृदय भी अत्यंत कोमल होता है। और जैसे दही जिस पात्र में डाला जाता है। उसी रूप ही ढल जाता है। अतः माता-पिता को अपने बालक के सामने किसी भी प्रकार की कुचेष्टा नहीं करना चाहिये। गाली नही देना चाहिये। बालक तो खाली कैसिट और टेप रिकार्डर की तरह होते हैं, जैसे टेप रिकार्डर में खाली कैसिट लगाकर यदि चालू कर दी जाये, तो उसके सामने हम जो भी वचन बोलेंगे, शब्द बोलेंगे। सारी की सारी बातें उसमें रिकार्ड हो जायेगीं। इसी प्रकार बालक के सामने जो भी बोला जायेगा। वह बालक भी इतने माइंड में वह सारी की सारी बाते रिकार्ड कर लेगा। यदि गीत बोले गये तो गीत रिकार्ड कर लेगा। और यदि गाली बोली गई तो गाली रिकार्ड कर लेगा। फिर जब भी टेप चालू किया जायेगा, कैसिट में जो होगा, वही उसमें से प्रकट हेने लगता है। इसी प्रकार बालक भी जब कभी किसी अवसर पर जो उसने सीखा है, वह बोलना प्रारंभ कर देता है। एक घटना आपसे कहता हूँ।

सुबह का वक्त, लुभावना मौसम था। ग्रामोफोन बज रहा था। संगीता के शौकीन पति-पत्नी और बच्चे संगीत का आनंद ले रहे थे। तभी पति महोदय ने कहा- कोई मजेदार सा रिकार्ड चढ़ाओ। पति महोदय के आदेश को सुनकर पत्नी ने रिकार्ड बदला। साज के स्वर गूँजे कि कण्ठ से बोल फूटे-''तेरे नैनों ने मारी कटारी।''।

पास ही बैठें साता वर्ष के बेटे ने अपने पिता जी से कहा-पिताजी आंखों के पास कटारी कहाँ होती है? बालक का प्रश्न था। बालक यदि कोई प्रश्न खड़ा कर दे, तो तब तक प्रश्न उठाते रहते हैं जब तक कि उन्हें उसका उत्तर नहीं दे दिया जाता। पिताजी ने कहा-बेटा फिर बतायेंगे। जब तुम बढ़े हो जाओगे। पिताजी के द्वारा बार-बार

टालने के बाद भी बालक का प्रश्न खड़ा था और बालक प्रश्न का उत्तर पाने के लिये जिद कर रहा था।

तभी पांच वर्ष की बेटी ने कहा-पिताजी मैं भी भैया को मारूँगी नैन कटारी। भैया मुझे बहुत तंग करता है।

मां ने दोनों को डांट लगाई। तब पिता ने गम्भीर होकर कहा-डांट तो हम पर पड़नी चाहिये, जो हम अपनी जिम्मेदारियों का ख्याल नहीं करते। इसलिये प्रत्येक माता-पिता का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने बालक के सामने किसी प्रकार का कुत्सित् व्यवहार न करें। जिससे बालक का भावी जीवन सुरक्षित रह सकें।

प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है ड्यूटी है कि वह अपने बालक का डर्टी करेक्टर न बनायें, अपितु करेक्टर बनानें का प्रयास करें। और वह तभी संभव है, जबकि हर माता-पिता अपने बालक को पूर्ण प्यार दें, प्रकृति के साथ जीना सिखायें। आप अपने बालक को अपने प्रिय मित्र की तरह समझें। उससे दोस्ताना व्यवहार भी रखें। जिससे बालक अपने अंदर की बातें आपको बतला सके और अंदर ही अंदर न रखें। क्योंकि जो बात माता-पिता और गुरु को भी बताई जा सकती, वह अंतरग की गुप्त से गुप्त बात अपने मित्र को बताई जाती है। और सच्चा मित्र भी इसकी उस बात की अपेक्षा नहीं करता, खिल्ली नहीं उड़ाता , अपितु गंभीरता से उसका समाधान करता है। इसलिये माता-पिता को अपने बालक से मात्र माता-पिता बनकर ही नहीं एक मित्र, एक दोस्त बनकर भी अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिये।

बालक सुचालक – माता पिता संचालक

कभी आपने विचार किया, बालक जिस वस्तु को देखता है उसे ही वह पाने के लिये लालायित हो जाता हैं। उसके ज्ञान की धारा उस की वस्तु की ओर समग्र रूप से प्रवाहमान होने लगती है। जब भी वह चाँद को देखता है तो उसे ही पाने के लिये मचलने लगता

है। और हाथी को देखता है तो हाथी पाने के लिये मचलने लगता है। बालक का ज्ञान सदैव प्रवाहमान होता है। और यदि उसे इस समय में माता-पिता का सदाचरण सद्संस्कार सद्व्यवहार प्राप्त हो जाये, तो बालक ही परमात्मा का रूप बन जायेगा, और यदि माता-पिता ने सही संस्कार ने दे पाये तो बालक ही पापात्मा का रूप दानव का रूप बन जाता है। बालक एक सुचालक वस्तु है। जिसमें माता-पिता के संचालन की नितान्त आवश्यकता है। जैसे विद्युत तार में संचालक यदि विद्युत का प्रवाह चालू कर दे तो वह विद्युत धारा घर में रोशनी पैदा कर देती है घर का अंधकार हरण कर लेती है। इसी प्रकार यदि बालक के अंदर माता-पिता एक सफल सम्यक् संचालक की भूमिका अदा करें तो वह बालक भी हर मन के अंदर फैले व्याप्त मोहांधकार को दूर कर परमात्मा की रोशनी से भर देगा।

इसीलिये प्रत्येक माता-पिता को चाहिये, कि वे अपने बालक में परमात्मा की उपासना, अर्चना, पूजा, आराधना संस्कार का विद्युत प्रवाहित करें। गुरुजनों की संगति को प्राप्त कराकर उनके चरणों में बैठाकर झुकना सिखायें। संतों के माध्यम से उसके कोमल हृदय में कारुणा, दया, प्रेम, वात्सल्यकी मानवीय धारा को प्रवाहित करने में सफल संचालक की भूमिका अदा करें। ध्यान रखें विद्युात धारा तो एक ही प्रकार की होती है, इसलिये उसके संचालन में उतनी विशेषता नहीं है लेकिन बालक के अंदर कौन सी धारा प्रवाहित करना है। कुसंस्कार की या सुसंस्कार की। क्योंकि जीवन में यही दो धारायें सतत प्रवाहमान हैं। कुसंस्कार की धारा के लिये संचालन की आवश्यकता नहीं है वह तो स्वत: संचालित होती है, सहज संचालन ही उसका स्वभाव है। बालक उसे स्वत संचालित होती है, सहज संचालन ही उसका स्वाभाव है। बालक उसे स्वत: सहज ही ग्रहण कर लेगा। लेकिन सद्संस्कारों की धारा बालक के जीवन में कैसे आये? कहाँ से आये? इस प्रकार का विचार कर उसे क्रियान्वित करने वाला ही सफल संचालक हो सकता है। अंत: माता-पिता के

लिये चाहिए कि वह बालक के सफल संचालक बनें। उसकी रक्षा उसके भावी जीवन के निर्माण के विषय में सदैव चिंतनशील रहत हुए अपने कर्तव्य का निर्वाह करें। तभी आप एक सफल सुसंचालक माता-पिता कहे जा सकते हैं।

सद्शिक्षा या सद्संस्कार : निर्णय आपका

जो माता-पिता अपने बालक के भावी जीवन के निर्माण में चिंतशील एवं प्रयत्नशील नहीं होते, उसकी रक्षा एवं पालन-पोषण नहीं करते, ध्यान रखें उन माता-पिता को बुढ़ापे में कोई पालन-पोषण करने वाला, सहारा देने वाला नहीं मिलता। अतः प्रत्येक माता-पिता को अपने बालक की रक्षा में अपना समय जरूर देना चाहिए। क्योकि जो देता है, वह ही प्राप्त करता है।

प्रकृति का ये अटल सिद्धांत है कि जो देगा, वह प्राप्त करेगा। जो जैसा देगा, वैसा प्राप्त करेगा। यदि अच्छा देगा, तो अच्छा प्राप्त करेगा, और बुरा देगा, तो बुरा प्राप्त करेगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि अच्छा दे, और बुरा प्राप्त करेगा। बबूल बोए, और नीम प्राप्त करे, अथवा आम प्राप्त करे। और जो बुरा करता है, वह अच्छा नहीं प्राप्त कर सकता। नीम को बोने वाला आम्र प्राप्त नहीं कर सकता, आम को बोने वाला नीम प्राप्त नहीं कर सकता। जा बोयेगा, वही प्राप्त करेगा। जो धरती को दिया गया, वही धरती ने अपने को लौटा दिया। जितना दिया जाता है, उससे कई गुना लौटा दिया जाता है। **धरती को एक बीज दिया जाता है और एक बीज, हजार बीज को लेकर के आता है अर्थात् दिया जाता है एक गुना और प्राप्त किया जाता है हजार गुना अच्छा किया तो आपके जीवन में हजार गुना अच्छा होगा, और बुरा किया, तो आपके जीवन में हजार गुना बुरा वापिस लौट आयेगा। इसलिये हमें अपनी झोली यदि अच्दे गुणों से भरना है, सुखों से भरना है तो आप दूसरे को थोड़ा सा सुख देना जरूर सीख लें आपका**

जीवन स्वयमेव सुखी हो जायेगा। सुख की आकांक्षा सुख न देगी सुख का त्याग ही सुख देगा। अपार सुख देगा। जितना तुमने न दिया होगा उससे भी अधिक प्राप्त होगा तुम आश्चर्य में पड़ जाओगे ऐसा चमत्कार कभी अपनी जिंदगी में नहीं देखा। यदि ऐसा हमें पहले ही पता होता तो हम पहले ही देना प्रारंभ कर देते। इतना वही सोचता है, जो ज्ञानी होता है। जानकर तो सुधरजोय वह ज्ञानी व्यक्ति की पहचान हैं। ज्ञानी की इससे ज्यादा परिष्कृत कोई दूसरी परिभाषा नहीं हो सकती। इसीलिये इस परिभाषा को अपने जीवन मे आत्मसात करके ज्ञानी बन जाना, अन्यथा ध्यान रखें। बुढ़ापे में तुम्हारे जीवन को सहारा देने वाला नहीं मिलेगा। जिससे तुमने जीवन भरी आकांक्षा रखी होगी, वही तुम्हें एक दिन ठुकरा देगा। अतः **दूसरे के जीवन का निर्माण करने के प्रति जो आपका यथार्थ आयोजन होगा, वह वास्तव में आपके जीवन के ही निर्माण का आयोजन होगा।**

आज तक इस धरती पर जितने भ्ज्ञी महापुरुषों ने जन्म लिया। जितने भी महापुरुष इस वसुंधरा की गोद में अवतरित हुये, उन सभी के जीवन मी मात्र निर्वाह की ही नहीं, अपितु जीवन निर्माण की अहम भूमिका उनके माता-पिता ने निर्वाह की है। उन माता-पिता ने अपने सभी स्वार्थों को तिलांजलि देकर अपने उस फूल से बालक के लिये अपना सर्वस्व नयौछावर कर दिया। **आज हम अपने बालकों को सद्शिक्षा तो देना चाहते हैं, अच्छी शिक्षा का प्रबंध तो करते हैं, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं देते। अच्छे संस्कार माता-पिता के अलावा कोई दूसरा दे ही नहीं सकता।**

माँ का दूध-वात्सल्य का पैगाम

आज माताएँ अपने बालक को अने स्तनपान से भी वंचित रखतीं हैं। उसे अपना स्तनपान नहीं कराती। और इसका कारण अपने सौंदर्य की सुरक्षा करना बतलातीं हैं। लेकिन ध्यान रखें, यदि माँ अपने

बालक को स्तनपान नहीं करायेगी, तो भी उसका सौंदर्य जीवत नहीं रहेगा। ''माँ का सौंदर्य पैदा हुआ करता है''। जो माताएँ अपने बालक को इस सौंदर्य खोने के डर से स्तनपान नहीं करातीं, वे बहुत बड़ी भ्रांति में है। माँ का स्तन बेटे के लिये हुआ करता है। एक मात्र उस पर बेटे का ही अधिकार है। माताएँ अपने बेटे के अधिकार को बालपने से ही छीनने लगीं हैं। यह वास्तव में मातृत्व पर बहुत बड़ा धब्बा है, कलंक है। यह अधिकार तो पशु भी अपने बच्चों से नहीं छीनते। एक गाय अपने बछड़े के लिये जीभ से प्रेम करती जाती है, और स्तनपान भ्ज्ञी करातीहै। गाय पशु होकर भी अपने बछड़े के अधिकार को जानती है। गाय पशु होकर भी अपने स्तन का सौंदर्य, उसकी सुखानुभूति जानती है। **जिस माँ का स्तन बालक के मुख से नहीं छुआ गया, वह स्तन नहीं मात्र मांस का पिण्ड है। इसीलिए शिशु के मुख से माँ का स्पर्शित स्तन और उसकी अवर्णनीय अनुभूति हर माँ को करना चाहिए।** और जिस माँ ने अपने बालक को स्तनपान नहीं कराया, वह बालक भी अपनी माँ को माँ कैसे कह पायेगा। वह बालक भी अपनी माँ को लजायगा। माँ का दूध वास्तव में बालक के अंदर वात्सल्य, करुणा, दया, ममता और समता का पैगाम लाता है।

जिस माँ ने अपने बालक को स्नेह से, प्रेम ले, वात्सल्य से सत्नपान कराया, वह माँ किसी भावी महापुरुष का भाग्य लिख रही है और जिस माँ ने क्रोध से अपने बालक को स्तनपान करा भी दिया तो उसने किसी पापात्मा, दुरात्मा बनाने का कार्य का कर दिया। इसीलिए ध्यान रखें अपने बालक रखें अपने बालक के स्तनपान कराते समय कभ्ज्ञी क्रोधित नहीं होता। यह हर माँ के लिये नितान्त आवश्यक है। यह स्तनपान कराते समय क्रोध न करें अपितु उस समय प्रेम का भाव रखें। परमात्मा का स्मरण करे। भगवान का नाम लें, उनका गुणानुवाद करे। **यदि परमात्मा के नाम का स्मरण करते हुए स्तनपान शिशु को कराया जायेगा, तो वह बालक**

महावीर का दूसरा रूप होगा। वह बालक राम का दूसरा रूप होगा। और यदि स्तनपान कराते समय क्रोध का भाव रहा, स्तनपान कराते समय पाप रूप माँ विचार करे, विषय भोग के मन में विचार रहें तो घर में कंस, रावण और औरगंजैब का आचरण रखनें वाला पुत्र उत्पन्न होगा।

विष्णु जी ने ब्रह्मा जी से कहा-कंस अपनी जगह ही गलत है, लेकिन उसमें सबसे बड़ी गल्ती उनके माता-पिता की है। जिस समय बालक कंस का जन्म हुआ था, उस समय उसके माता-पिता ने उसको संस्कार नहीं दिये। शिशु कंस ने कभी अपनी माँ का स्तनपान नहीं किया। यदि उसने अपनी माँ का स्तनपान किया होता तो उसके अंदर प्रेम का भाव होता, स्नेह का भाव होता, वात्सल्य का भाव होता। करुणा और दया के परिणाम होते। लेकिन उस शिशु के साथ बड़ा अन्याय और अत्याचार किया गया। जन्म होते ही उस बालक को माँ के संस्कार मिले। यही कारण है, कि जब मैं देवकी के गर्भ से जन्म लूँगा,तो अपनी माँ के संस्कार वशात् वह उस नवजात शिशुओं का मारने का उपक्रम रचेगा। यद्यपि जैन दर्शन अवतारवाद को स्वीकार नहीं करता, अवतरण को स्वीकार करता हे। कोई भी जीव अवतार नहीं लेता अवतरण करता है। अयतरित होता है। अवतारवाद में आकाश से धरती की यात्रा है और अवतरण में धरती से आकाश की यात्रा है। जो एक बार परमात्मा बन जाता है, वह पुन: फिर इस संसार में जन्म नहीं लेता। सदा-सदा के लिये जो राग-द्वेष से मुक्त हो जाता है। इसे ही अवतरण कहते हैं।

नान्यथा मुनि भाषणं

जैन दर्शन के अनुसार जिस समय अमितगति मुनि विहार करते हुए मथुरा नगरी आये, तो कंस की रानी जीवद्यशा ने देवकी के वस्त्र को दिखाते हुए अमितगति मुनि की हंसी की थी, उपहास किया था, परिहास किया था। तब अमितगति मुनि ने उसके इस कृत्य को देखते

हुए, इस बात की घोषणा कर दी कि जिस देवकी के वस्त्र को दिखाकर तूने उपहास किया है, उसी देवकी का आठवाँ पुत्र तेरे पति को मारने वाला होगा। ऐसा सुनकर जीवद्यशा भयतीत हो गई, एवं गुस्से में आकर उस वस्त्र के दो टुकड़े कर दिये। तब अमितगति मुनि ने कहा-वह देवकी का आठवाँ पुत्र ते पति के साथ तेरे पिता को भ्ज्ञी मारन वाला होगा। तब जीवद्यशा अत्यंत भयभीत होती हुई, अपने पति कंस के पास पहुँची, और सम्स्त घटनाक्रम कह सुनाया। तब कंस ने उसे धैर्य बंधाते हुए कहा कि यदि ऐसी बात है, तो "नान्यथा मुनि भाषणं"। मुनि अन्यथा नहीं बोलतें, असत्य नहीं बोलते। लेकिन मैं देवकी के प्रसव को अपने घर पर ही कराऊँगा आर उसके होने वाले पुत्र को मौत की नींद में सुला दूँगा। इसलिये तुम भयतीत मत हो।

विष्णु जी ने कहा – कंस की माँ ने अपने पुत्र को जन्म होते ही मौत के मुँह में धकेल दिया था, यही कारण है, कि उसकी माँ का संस्कार बालक के जीवन में भी आ गया और वह भी उन नवजात शिशुओं को मारने का उपक्रम रचने लगा।

आज कृष्ण जन्माष्टमी का अवसर है, और आज के दिन नारायण श्री कृष्ण का जन्म देवकी के गर्भ से कंस के कारागृह में हुआ था। और आचार्य श्री मानतुंग स्वामी के भक्ति स्तोत्र का जन्म भी कारागृह में ही जन्मा है। कारागृह से जुड़ा यह कथानक कारागृह मुक्ति का अभियान है। जहाँ श्री कृष्ण के पुण्य के प्रभाव से कारागृह के द्वार खुले गये, और वे उस कारागृह से मुक्त हो गये। वहीं मानतुंग स्वामी इस कारागृह से मुक्त होने के लिये नहीं अपितु संसार रूपी कारागृह से मुक्त होने के लिये परमात्मा की स्तुति, भक्ति में डूबे हुये हैं। सन्त तिलक आचार्य मानतुंग स्वामी प्रभु आदीश्वर की स्तुति करते हुए श्री मक्तामर जी स्तोत्र के पांचवें श्लोक में कहते हैं–

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश।
कर्तुं–स्तवं विगत शक्ति–रपि–प्रवृतः।।

प्रीत्यात्म वीर्य–मविचार्य मृगी–मृगेन्द्रं।
नाभ्येति किं निज–शिशोः परिपालनार्थम्।।

हे मुनीश! वह मैं (अल्पबुद्धि का धारक) शक्ति से हीन होने पर भी आपकी भक्ति के वशात् अपकी स्तुति करने के लिये उसी प्रकार प्रवृत हो रहा हूँ, जिस प्रकार अपने शिशु के रक्षार्थ स्नेह वशात् कमजोर हिरणी क्या सिंह का सामना नहीं करती, अर्थात् अवश्य ही करती है! यहाँ पर उपरिम दो पंक्तियों का विशद व्याख्यान कल आप सभी के लिये विभिन्न पहलुओं से समझाया था।

यहाँ पर नीचे की दो पंक्तियों में आचार्य महाराज ने बड़ा गहन चिंतन प्रस्तुत किया है। जो हमारी चेतना को अच्छी तरह से झकझोरने वाला है। हमारे अतरंग को वर्तमान की उन भीषण विकृतियों से परिचय करायेगा, जो मानव को दानवता के पथ पर ले जा चुकी हैं। आचार्य महाराज की ये पंक्तियाँ हमारे जीवन के लिये बहुत बड़ी चुनौती है। सम्पूर्ण मानव जाति को मान9वता का आलोक प्रदान करने वाली हैं। हमारे खोये हुए जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना करने वाली हैं। विकृतियों के बाजार में लुटती हुई अस्मत को रोकते वाली हैं। विकृत मानसिकता को स्वसी परिपक्वता प्रदान करने वाली हैं। इन दो पंक्तियों में हर माँ का जीवन चरित्र छिपा है। हर माँ की करुणा-दया, ममता और समता, प्रेम और क्षमा को, आचार्य श्री ने इस उदाहरण के द्वारा उजागर किया है।

शिशु की सुरक्षा ही मातृत्व की परीक्षा

अपने शिशु के परिपालन के लिये, स्नेहवशात् कमजोर हिरणी, सिंह का सामना करने के लिये भी तैयार है। बड़ा गहरा रहस्य छुपा है। माँ की ममता का साक्षात् जीवन्त निरूपण किया गया है। एक प्रश्न खड़ा कर दिया वर्तमान की माताओं के लिये, माँ को कैसा

होना चाहिए? माँ का परिचय क्या होना चाहिए?

वास्तव मे गर्भधारण करने की शक्ति का होना मात्र माँ का परिचय नहीं है। गर्भधारण कर लेना, मात्र माँ का परिचय नहीं है, अपितु गर्भधारण करने के पश्चात् उस गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा करना, उसकी रक्षा के लिये सदैव प्रयत्नशील गर्भिणी स्त्री ही, माँ की संज्ञा को प्राप्त हो सकती है।

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि यहाँ पर आचार्य श्री ने तिर्यच माँ का उदाहरण तो प्रस्तुत किया है, लेकिन कोई मनुष्य जाति की माँका वर्णन, उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया। उसका कारण है, रीतन है, हेतु है। क्योंकि तिर्यच अपने शिशु का पालन पोषण निस्वार्थ भाव से किया करते है। उनका कोई स्वार्थभाव नहीं होता। उनके अंदर सिर्फ मातृत्व की भावना रहती है। उन्हें यह नहीं रहता कि हमारा शिशु बड़ा होकर हमारी रक्षा करेगा, हमारा शिशु बड़ा होकर हमारा भी पालन-पोषण करेगा। इस प्रकार का, ख्याल इस प्रकार का विचार उस तिर्यच माँ के अंदर नहीं होता। लेकिन मनुष्य जाति को माँ के अंदर यह स्वाथ्र भी छुपा रहता है। हमारा बालक बड़ा होकर बुढ़ापे का सहारा बनेगा। यह भाव हर माँ के अंदर पैदा हो जाता है। यही कारण है कि आचार्य महाराज ने यहाँ तिर्यच माँ हिरणी का उदाहरण उदधृत किया है।

वहीं दूसरी ओर शिशु शब्द को रखा है और शिशु शब्द के द्वारा भी उन्होंने बहुत बड़ी शिक्षा देने की कोशिश की है बहुत बड़े रहस्य को इसमें छुपा दिया है। आचार्य श्री ने शिशु शब्द का तो रखा, लेकिन नर शिशु या मादा शिशु की बात नहीं की। उन्होंने ऐसा नहीं कहा-कि हिरणी नर शिशु के स्नेह वशात् सिंह का सामना करने वे लिनये तैयार हो जाती है। लेकिन मादा शिशु की रक्षा नहीं करती, सो भी बात नहीं है। हिरणी अपने शिशु में भेदभाव नहीं रखती है। अपने बच्चों के प्रति इतनी तुच्छ और घिनौनी विचारधारा नहीं रखती है। जितना प्यार-जितना प्रेम, जितना वात्सल्य, जितना स्नेह उसका नर

शिशु के प्रति होता है। उतना ही प्रेम उतनी ही प्रीति, वात्सल्य वह अपने मादा शिशु के प्रति भी रखती है।

यदि नर शिशु की रक्षा के लिये हिरणी उस क्रूर सिंह का सामना करने को तैयार हो जाती है, तो मादा शिशु की रक्षार्थ भी वह सिंह से सामना करने वे लिये तैयार रहती है। तिर्यचों ने ऐसा भेदभाव नहीं सीखा। हिरणी का शिशु के प्रति निस्वार्थ प्रेम, निस्वार्थ रक्षा का भाव आज सम्पूर्ण मानवच जाति के लिये यथार्थ प्रेरणा एवं शिक्षा है।

हर माँ के लिये अपने गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा करनी चाहिए। शिशु की सुरक्षा ही हर माँ के मातृत्व की सुरक्षा है। वर्तमान में अपने गर्भसी शिशु के विषय में माताओं की भावनायें अत्यंत घिनौनी हो गई हैं। क्रूर हो गई है।

वासना की वेदी पर दफन–माँ की ममता

आज माताओं की अपने बच्चों के विषय में विचारधारायें अत्यंत नीचतापूर्ण हो गई हैं, और उन्होंने अपने जीवन में गर्भपात जैसे निकृष्ट कार्य को जन्म देकर अपने मातृत्व को, अपनी करुणा, दया, वात्सल्य, स्नेह को लज्जित ही नहीं अपितु पूर्णता नष्ट भ्रष्ट कर दिया है। अपनी वासना की वेदी पर मातृत्व की ममता की बलि चढ़ा दी है। वासना की वैदी पर करुणा, दया को रौंद डाला है। वासना वे नाम पर ये कलमुहीं माताएँ अपने अजन्में गर्भस्थ शिुशु को तड़पा–तड़पाकर मारने तक में नहीं हिचकिचातीं। अपने सौंदर्य की रक्षा के लिये ये हत्यारित माताएँ अपने उस अजन्में शिशु के सौंदर्य को प्रकट तक नहीं होने देती। धिक्कार है ऐसी वासना को। लानत है ऐस प्रेम को। जिसके द्वारा वास्तविक प्रेम का स्वरूप नष्ट किया जा रहा है। धिक्कार है इन माताओं को, जो अपनी वासनाओं का परिचय देने के लिये डॉक्टर्स के पास तक जाने में नहीं हिकिचातीं। इन्हें लज्जा तक नहीं। आती ऐसी निर्लज्ज स्त्रियाँ वास्तव में माता कहलाने के योग्य नहीं हैं। ''माँ तो वही है, जो गर्भधारण करने के पश्चात् मातृत्व प्रेम

से अपने गर्भस्थ शिशु की रक्षा करती हैं।'' उसके जीवन के लिये अपना सुख-दु:ख सब समर्पित कर देती है।

इससे विपरीत जो स्त्रियाँ गर्भ में आये शिशु के लिय अल्ट्रासाउन्ड से अथवा सोनोग्राफी के द्वारा चेक करा कर उनका खात्मा करवा देती है। **अपने सौंदर्य की रक्षा के लिये गर्भपात करवा देती हैं, वे स्त्रियाँ माँ नहीं, स्त्री नहीं, डायन हुआ करतीं है। और ऐसी डायन आज घर-घर में पैदा हो गई हैं। इन्हें अपनी आबरु अपनी इज्जत क्लीनिकि में जाकर बदनाम करते हुए शर्म तक नहीं आती। ऐसा घिनौना नीच कृत्य करते हुये ग्लानि का भाव तक पैदा नहीं होता। यह नारीत्व का, मातृत्व का सबसे बड़ा अपमान है। जो स्वयं का स्वयं के द्वारा ही किया जा रहा है।**

इस भारत भूमि पर प्रेम, करुणा, दया, स्नेह वात्सल्य की मधुर आवाजें मधुर गान सुनाई देता था। यह पादन पुनीत वसुंधरा अनेक मर्यादायें, कुलाचार और धर्माचार से पूजित थी गौरान्वित थी। घर-घर में सदाचार और सुसंस्कारों की अविरल, अविराम सरिता वंश परम्परागत बहती चली आ रही थी। वह सदाचार, वह धर्माचार, वह कुलाचार आज दिन दहाड़े लूट जा रह है। माँ जिसे सदाचार-कुलाचार, और धर्माचार की रक्षा करने वाली सुशील नारी कहा जाता था। आज वही माँ सारी कुलाचार की संस्कृति को लजाने में सर्वोत्कृष्ट स्थान पर है। जिस देश में घर के प्रांगणों में कबूतरों को दाना डालकर मातायें उनकी रक्षा करती थीं। जिसे देश की सन्नारियाँ प्रसव पीड़ित कुतियों को भी घी का हलुवा बनाकर खिलाती थीं। अपना मातृत्व भाव जगाकर उनकी उनके बच्चों की सुरक्षा करती थीं, आज वहीं मातायें एबोर्सन सेण्टर में जाकर अपने ही बच्चों को पेट में मरवाकर, निर्दयता का प्रदर्शन कर रही हैं। इतनी निर्दयता तो उन पशुओं में भी नहीं पाई जाती है।

आज तक कभी किसी कुतिया के विषय में नहीं सुना, कि वह गर्भपात कराने के लिये किसी एबोर्सन सेण्टर पहुँची

हो। किसी सुअरनी ने भी ऐसा घिनौना कृत्य नहीं किया। पशु भी मातृत्व की संवेदनाओं को समझते हैं, एवं अपने शिशु के जीवन से खिलवाड़ नहीं करते हैं। क्या आज हमारी संस्कृति यूँ ही बदनाम होती रहेगी? और वह भी इन माताओं के द्वारा। आखिर कब तक हम इस पर विचार नहीं करेंगे? वास्तव में आज पशुओं से भी ज्यादा पशुता हमारे जीवन में प्रवेश कर गई है। हमें अपनी वासनाओं के सामने अपना कुलाचार, धर्माचार दिखाई नहीं दे रहा हैं। आज माँ-बेटे के बीच की लोरियाँ दफर्ना जा रहीं हैं। चारों ओर उन गर्भस्थ शिशुओं की गूंगी चीख हृदय को दहलाने वानी है। यह घिनौना कृत्य माताओं द्वारा तो खेला ही जा रहा है साथ ही आज कुँवारी माताओं द्वारा भी इसमें सहभागिता कम नहीं है।

गर्भपात, पारिवारिक संदेह का उत्पात

आज विज्ञान ने जब से गर्भपात, गर्भ निरोधक औषधियों एवं निरोध का आविष्कार किया है, और सरकार द्वारा दिया गया समर्थन सामाजिक जीवन के लिये अत्यधिक घातक सिद्ध हुआ है। स्त्री पुरुषों के बीच वैवाहिक जीवन में अविश्वार और शंका, संदेह की जड़े गहरी हुई हैं। इन आविष्कारों ने अविवाहित अवस्था में ही युवक युवतियों को काम वासना की ओर आकर्षित किया है। जिससे समाज में स्वच्छंदता, निरंकुशता, व्यभिचार, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, अपहरण, हिंसा को बोलबाला ही बढ़ा है। देश और समाज में अनेक समस्यायें ही पैदा हुई हैं।

एक समय था, जब कि नारियां, युवतियां, इस बात से डरती थीं, कि किसी पुरुष से गलत संबंध स्थापित किया, और गर्भ ठहर गया, तो हमारे भावी जीवन का क्या होगा। समाज में घर, परिवार में मुँह दिखाने के लायक भी नहीं रहूँगी। मेरी शादी नहीं होगी। अथवा शादी में अनेक परेशानियां खड़ी हो जायेगी। इस भय से वे अपने शील की रक्षा करती थीं। परंतु गर्भपात, गर्भ निरोधक दवाईयों ने

शील नष्ट करने का खुला निमंत्रण दिया है। कामुकता को वासना को बढ़ावा दिया है।

कंस का वंश आज भी जीवित है

एक समय वह था, जब नारी अपने शील की सुरक्षा के लिये, अपना सर्वस्व, अपने प्राण तक खो देती थी, अर्थात् अपने शील की रक्षा प्राणपन से करती थी। स्त्री का सर्वस्व उसका शील ही हुआ करता है। शील ही उसका गहना होता है। शील ही उसका जीवन होता है। शील ही उसका सौंदर्य होता है। लेकिन वासने के ज्वार ने आज स्त्री को, नारी को, अपने शील के प्रति जागरुक रहने से वंचित कर दिया है। जिस देश में नारी शादी के पहले परपुरुष को आँखे उठाकर भी नहीं देखती थीं उनसे आलिंगन करता तो दूर रहा। पर आज तो नारी इतनी स्वच्छन्द होती जा रही है, कि विवा के पहले ही वह अपने शील के साथ खिलवाड़ कितने ही बार पुरुष के द्वारा करवा चुकी होती है। **विवाह के पहले ही पुरुष का आलिंगन कर अपने नारीत्व को खो देना आज आम बात होती जा रही हे। सरे आज नारीत्व को कलंकित किया जा रहा है। वासना भी भूख ने अपनी उम्र को भी उपेक्षित कर दिया है। जो उम्र अभी कच्ची कली का प्रमाण दे रही है, वही उम्र अब मातृत्व माँ का रूप लेकर तमाम जिंदगी को सुख विहीन कर रही है।** छोटी उम्र में पुरुष का आलिंगन आगामी जीवन के लिये बड़ा खतरनाक हुआ करता है। लेकिन स्वच्छन्द बालिकायें छोटी सी उम्र में बनकर अपना सम्पूर्ण जीवन बदबाद कर लेती हैं। छोटी उम्र में पुरूप का सहवास अत्यंत विकराल है।

पाश्चात्य देशों में एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है, कि जबसे गर्भपात और गर्भ निरोधक की सुविधा हुई है तब से गर्भधारण का

भय समाप्त हो जाने से स्कूली–छात्रायें 14 वर्ष से कम उम्र में 15 प्रतिशत बालिकाओं ने कम से कम एक बार पुरुषों से अवैध संबंध स्थापित कर यौन सुख का आनंद लिया और अनेक बालिकाओं ने गर्भपात भी कराया। 18 वर्ष तक की उम्र तक 2 से 30 प्रतिशत बालिकाओं ने भी अवैध संबंध स्थापित कर लिये और गर्भपात भी कराना पड़ा। अन्य से भी पूछा गया, तो वे माता–पिता का डर एवं गर्भधारण होने से डार से इस कार्य से दूर हैं। परंतु यौन सुख की आकांक्षा बनी रहती है। इससे सिद्ध होता कि **गर्भपात एवं गर्भ निरोधक औषधियों ने व्यभिचार, कामुकता, वासना, यौन सुख की तीव्र आकांक्षा को ही नये पंख दिये हैं।**

सन् 1969 से पहले भारत में गर्भपात को कालूनन अपराध माना जाता था। तथा गर्भपात कराने वाले को धारा 312 के अनुसार 3 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास की सजा तक दी जाती थी। लेकिन गर्भपात एवं गर्भ निरोधक सामग्री के अविष्कार ने हमारे संविधान का खुले आम कत्ल किया है।

कैंसर शोध संस्थान के विशेषज्ञ डा. के.के. अग्रवाल ने बताया कि बालिकाओं में कम उम्र मे पुरुष का सहवास गर्भाशय कैंसर को जन्म देने वाला भी हो सकता है तथा उम्र बढ़ने पर स्तन कैंसर होने का भी खतरा रहता है। स्तन कैंसर ज्यादातर 30 से 40 वर्ष की उम्र में होने की संभावना रहती है। (13 अगस्त 2000, अमर उजाला)

छोटी उम्र में वासना को शांत करने के लिये स्वयं पर संयम न रखने वाली ऐसी कुंवारी माताओं के द्वारा कुलाचार, धर्माचार, एवं भारतीय संस्कृति को जिस तरह कुचला, रौंदा जा रहा हैं, उसे देखकर प्रकृति भी शर्मिन्दित हो रही है। उनके गर्भ मे आये हुए गर्भसी शिशु की निर्दोषता होने पर भी उसके साथ अत्याचार क्रूरता का व्यवहार किया जाता है। लोकलाज के भय से उस गर्भस्थ शिशु को गर्भपात के द्वारा मौत के घट उतार दिया जाता है। अथवा कितने हीबार जन्म लेते ही मृयु की नींद में सुला दिया जाता है। नवजात

शिशुओं की निर्मम हत्याओं के प्रकरण हमारे समाज में बढ़ती विद्रूपता और असंवेदनशीलता के प्रमाण हैं। कुंवारी माताओं द्वारा जन्म लेने वाले शिशुओं में लड़के और लड़की दोनों होते हैं किंतु लड़कियों के प्रति व्याप्त असहिष्णुता और बोढ भावना के कारण अनेक लड़कियाँ माताओं द्वारा ही मौत के घाट उतार दी जाती हैं।

इन नवजात शिशुओं को समाप्त करने के तरीके भी बहुत क्रूर होते हैं। प्राय: कपड़ा मुंह में ठूंसकर अथवा गला घोंटकर उन मासूमों पर मौत का कहर ढा दिया जाता है। बदनामी का भय, समस्त मानवीय भावनाओं पर हावी हो जाता है, और नन्हा जीवन हिचकियाँ लेता हुआ, समाप्त हो जाता है। वासना की आदिम भूख मिटाने के लिये, स्व्यं पर नियंत्रण न रख पाने पर नवजात शिशुओं अथवा गर्भस्थ शिशुओं पर किया जाने यह गर्भपात जैसा कार्य हृदय की अत्यंत बर्बरता परिचायक है।

कभी अपने विचार किया, इतनी क्रूरता तो कंस के माता-पिता ने भी अपने जीवन में नहीं अपनाई। इतनी क्रूरता तो कुन्ती ने भी अपने जीवन मे नहीं की। यदि यह राक्षसी वृत्ति उनके जीवन में आती तो कंस और कर्ण जैसे वीर पुत्र भी पैदा नहीं हो पाते। अपनी माँ के संस्कार वशात कंस के परिणाम भी क्रूर हो गये, लेकिन कंस ने भी कभी अपने जीवन काल में इतनी क्रूरता, इतनी नीचता, इतनी बर्बरता, इतनी राक्षसी वृत्ति का परिचय नहीं दिया, जितना कि आज ममत की देवी माँ के द्वारा अपने गर्भस्थ शिशुओं के साथ क्रूर व्यवहार किया जा रहा है।

कंस ने अपनी रानी जीवद्यशा से कहा-कि प्रिये! तुम भयवीत न हो, मैं देवकी का प्रसव अपने यहाँ पर ही करवाऊँगा, और जन्म होते ही नवजात शिशु को मौत की नीद में सुला दूँगा।

कंस ने भी अपने जीवन मे यह गर्भपात जैसा कार्य नहीं किया। वह चाहता तो गर्भ में आये शिशु को ही मार डालता। लेकिन धिक्कार है कि इस धरती पर कंस तो नहीं रहा। कंस तो मारा गया

लेकिन कंस का वंश आज भी जीवित है जो कंस से भी ज्यादा क्रूरता का पचिरय दे रहा है। मथुरा नगरी में तो एक ही कंस पैदा हुआ था लेकिन आज तो घर-घर में कंस और डायनें उत्पन्न हो चुकी है। जो अपनी वासना को तृप्त करने के लिये अपने शिशु पर भी अत्याचार उसकी क्रूरतम मौत को अंजाम देने में नहीं हिचकिचाते।

हत्या तो आखिर हत्या है.........

यह गर्भपात कराने के तरीकेभी इतने भयंकर होते हैं कि दिल रो उठता है। कलेजा फटने लगता हे। जो एक बार भी अपनी इन आँखों से वह गर्भपात का भयानक दृश्क देख ले, तो निश्चित ही उसके होशोहवास खो जायेंगे। लेकिन वे क्रूर चाण्डाल डॉक्टर जिन्होंने दूसरों की सेवा करने के लिये कसमें खाईं थीं, जिन्होंने जीवों की प्राण रक्षा, के लिये यह दया, करुणा, प्रेम का मार्ग चुना था। वे भी थोड़े से पैसों के लालच में आकर इतने वीभत्स, दिल दहलाने वाले गर्भपात को करने से नहीं चूकते। और तो और यदि कोई महिला स्वास्थ्य केन्द्र प्रसूति गृह पर डॉक्टर से सलाह लेने जाती हैं, तो वे डॉक्टर अपनी चिकन चुपड़ी बातों में फंसाकर उसे गर्भपात करने की सलाह दे डालते हैं। यदि आपको अभी बच्चे की आवश्यकता नहीं है तो गर्भपात करवा लें जिससे आपका सौंदर्य निखरा रहेगा। आको कोई समस्या भी नहीं रहेगी। आप अपने जीवन को आनंद के साथ व्यतीत कर पायेंगी आदि-आदि। इतनीनीचतापूर्ण बातें बड़े प्रभावशाली ढंग से पेश की जाती हैं। अिवा जो मातायें इस अभी भी पाप के डर सहमत नहीं हो पातीं, तो उन्हें भी पुन:-पुन: समझाया जाता है। अभी शुरुआत हैं, प्रारंभिक अवसिा ही है, उसमें जीव नहीं होता है, वह तो मांस का टुकड़ा है। उसको निकाल कर फेंक देने में कोई पाप नहीं लगता और फिर आप बिल्कुल चिंता न करें, बिल्कुल घबड़ायें न आपको इसमें बिल्कुल भी पीड़ा, कष्ट, वेदना नहीं होगी। एक सप्ताह में ही तो खड़े होकर दौड़ने लग

जाओगी आपका यौवन आपका सौंदर्य, आपकी देहयष्टि सब सुरक्षित रहेगा।

इस प्रकार अपने प्रचार जाल में फंसाकर उन भोली-भोली नारियों को एबोर्शन कराने के लिये तैयार कर लेते हैं। उस बेचारी को क्या पता-कि तीसरे महीने से ही बच्चा पेट में हिलने-डुलने लगता है, और जीव तो गर्भाधान के समय ही अन्दर गर्भ में अपना स्थान संभाल लेता है। संभोग के समय ही पुरुष वीर्य के शुक्राणु और स्त्री बीज अर्थात् अण्डाणु के निषेचन मितजपसपगम लिन के समय ही उसमें जीवन का संचार होने लगता है। गर्भ में जीव का अस्तित्व प्रथम क्षण से ही हो जाता है। जीव के बिना विकास संभव नहीं होता। आज तक कभी ऐसा नहीं देखा गया, कि जीव रहित मांस, मज्जा, हड्डी आदि वस्तु का वर्धन हो रहा हो। इनका परिवर्धन एक मात्र जीव के रहने पर ही सभव है। इसलिये आज मै। उन माताओं का आगाह करना चाहता हँ, जो इस विषय में परिचित नहीं हे। चाहे आपसे चींटी, मच्छर की मृत्यु हत्या हो जावे, चाहे गर्भस्थ शिशु की। हत्या तो हत्या ही है। और चींटी, मच्छर तो तीन व चार इंद्रिय जीव है पर गर्भस्थ शिशु तो साक्षात पंचेन्द्रिय जीव हैं। उसका वध करना, उसको मारना, उसकी हत्या करना साक्षात् नरक के लिये सीधा खुला मार्ग हैं। यदि हम अपने परमात्मा पर विश्वास रखते हैं। अहिंसा धर्म के अनुयायी हैं, तो ध्यान रखना अपने जीवन में गर्भपात जैसे कृत्य को कभी मत करना। अन्यथा आप किसी हत्यारिन से कम नहीं कहला सकते।

गर्भपात के, द्वारा जो गर्भस्थ शिशु की हत्या की जाती है, उसकी विधि उसका तरीका सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दिन दहाड़े मारकर रो पड़ता है। आज मै आपको बतला देना चाहता हूँ, उस मासूम अनबोले गर्भस्थ शिशु के निर्मम हत्या के तौर-तरीके! जिनके द्वारा हम अपनी अहिंसा को, अपनी करुणा, ममता, दया का गला घोंट कर अपनी सभ्यता का थोथा प्रदर्शन करते हैं।

डी.अन्ड.सी.आपरेशन- डाक्टरी साधनों के द्वारा सगर्भा स्त्री के गर्भाशय का मुख विस्तृत किया जाता है। फिर उस साधन के बीच एक चाकू या कैंची जैसे हथियार को अन्दर डालकर जीवित बच्चे को उसके द्वारा छिन्न-भिन्न किया जाता है। गर्भ मे तड़प-तड़प कर बेचारा, रक्त से लथ-पथ सना हुआ असहाय वेदना को भोगकर मृत्यु की शरण लेता है। फिर एक चम्मच जैसे साधन की मदद से उस बच्चे के टुकड़े-टुकड़े बाहर निकाल लिये जाते हैं। कुचलता हुआ सिर लहुलुहान आंते, बाहर निकली हुई आंखें, दुनिया में जिसने पहली सांस तक न ली, ऐस फेफड़े, धड़कता नन्हा सा हृदय, हाथ-पैर सब कुद जल्दी-जल्दी बाल्टी में कूडें करकट की तरह डॉक्टर को फेंक देना पड़ता है। क्योंकि बाहर गर्भपात की उम्मीद्वार बहिनो की लंबी कतार खड़ी है। इसलिये डॉक्टर को सब कुछ जल्दी-जल्दी निपटाना पड़ता है।

बहुत बार बच्चे को तड़प कर मरने का समय भी नहीं दिया जाता। घुप्पकर अंधेरे में तीर चलाने जैसा यह आपरेशन है। हथियार गर्भ में रहे हुये बालक के सिर छाती, पेट या हृदय मे न घुसकर हाथ पैर या जांघ में घुसे तो बच्चा जल्दी मरता नहीं है। इर्सा अति जल्दबाजी में गर्भ से निकालकर फैंके हुये धड़कन युक्त हृदय को देखकर डॉक्टर्स-नर्स और सफाई कर्मचारी तक अपनी आंखे फेर लेते हैं।

यह हथियार कभी जल्दबाजी में कभी अनभ्यस्त हाथों से गर्भाशय को हानि पहुँचाता है। ऐस केसों में लंबे समय तक खुन बहता है। अंदर घाव पड़ जाते हैं, और जीवन पर्यन्त प्रदर रोग हो जाता है। दाम्पत्य जीवन दु:खद बन जाता है, और किसी-किसी केसे में ऐसी स्त्री पुनः माता भी नहीं बन पाती है।

चूसन पद्धति–गर्भाशय में एक पोली नलिका के पर्यंत भाग को प्रवेश करा दिया जाता है। उस नलिका के साथ एक पम्प जुड़ा हुआ होता है, एवं दूसरे सिरे पर एक बड़ी बोतल जुड़ी हुई रहती है।

नलिका का एक सिरा गर्भाशय में छिद्र करने के बाद पम्प को दबाते और छोड़ते हैं,जिससे गर्भ के अंदर रहा हुआ बच्चा पछाड़ खाता है। कसाई बकरे को एक झटके में हलाल करता है, लेकिन इस पद्धति से तो बचचे का कभी यह तो कभी वह अंग झपट में आ जाता है। आंखों की पुतलियाँ बाहर निकल आती हैं।(सक्शन बाहर खींचने की क्रिया) के कारण, छाती, पेट सिर के विभिन्न कोमल अवयव कट-कट कर बिखरे हुये बाहर आते हैं। और यदि कोई जीव ज्यादा मजबूत और बलिष्ठ हो तो पूरा जिंदा का जिंदा बाहर आ जाता है, और अंत में बंद बोतल में जोर से पछाड़ खाकर उसका चूरा-चूरा हो जाता है। कितनी ही देर तक बालक उस बोतल में तड़पता रहता है। और फिर श्वास के रुंध जाने से अंत में ठंडा पड़ जाता है। इस पद्धति में कभी पूरा गर्भाशय खींचा हुआ बाहर आ जाता है। उन स्त्रियों को जिंदगी भर अनेक तकलीफों का सामना करना पड़ता है। कमर में हमेशा के लिये दर्द हो जाता है। फिर पीछे का गर्भाधान प्रतिक्रिया करता है, और रक्तसाव के कारण स्त्री एकदम कमजोर बन जाती है।

डिस्टरोटोमी (छोटा सीजेरियन)– पेडू को चीरकर सगर्भा स्त्री की आंतो को बाहर निकालकर, गर्भाशय को खोलकर, जीवित बालक को बाहर निकाल लिया जाता है। फिर उसको बाल्टी में फँक देना पड़ता है। हाथ-पैर हिलाता, तड़पता अपनी नन्हीं सी रुलाई से पत्थर दिल को को मोम बनाने वाला, यह बालक बाल्टी में ही मर जाता है। उसमें भ्भी कितने ही जबर जान वाले जीव घंटो तक मृत्यु को कबूल नहीं होते। लेकिन आपरेशन थियेटर में दूसरा केश हाथ में लेना है इसलिये बाल्टी में उस जिंदा बालक पर तीक्ष्ण हथियार से छेद किये जाते है, या जोरदार झटका लगाकर उसका कचूमर बना दिया जाता है। इतनी क्रूरता तो कातिल भी नहीं करते हैं। यदि वे भी देख लें, तो ऐसे काम करने वालों के साथ दुर्व्यवहार कर बैठे।

जहरी क्षार वाली पद्धति–एक लंबी मोटी सी सुई गर्भाशय में

भौंक दी जाती है। उसमें पिचकारी की सहायते से क्षार का द्रवण छोड़ दिया जाता है, चारों ओर द्रावण से घिरा हुआ वह बालक क्षार का कुछ अंश निगल जाता है, और कुछ ही समय बाद बालक को गर्भाशय में हिचकी आती है। जहर खाये व्यक्ति की तरह गर्भाशय में वह तड़पने लगता है। क्षार की दाहकता के कारण उसकी चमड़ी श्याम पड़ जाती है। फिर उसको बाहर निकाल लिया जाता है। बहुत बार जल्दबाजी में निकाल लेने पर वह बच्च कुछ जिन्दा होता हे। उस समय उसकी चमड़ी बादलनुमा होती है। ऐस गर्भपात में यदि गर्भ जुड़वाँ हो, तो एक मरा हुआ, दूसरा जिंदा आता है। लेकिन उसको भी तुरन्त घातक उपायों से मौत के घाट उतार दिया जाता है।

गर्भपात के इस घिनौने क्रूरतम कृत्य में कितनी ही कन्यायें एवं मातायें अज्ञानता वश या जानबूझकर गलत इन्फोर्मेशन देतीं हैं। मगर वे कहती हैं, कहीं इससे अधिक परिपक्व बालक निकलता है।

एक आपरेशन में इसी प्रकार से गलत जानकारी देकर गर्भपात करानी वाली हत्यारिन माँ का एक उदाहरण है कि आपरेशन के उपरांत सात महीने का जिंदा बालक निकला। ''मुझे भी इस दुनियाँ में जीने का हक है''। यह बताने के लिये वह जोर-जोर से रोने लगा। डॉक्टर ने उसे भंगी को देने के लिये आया को सौंपा। जीवित बालक को दफन करने भंगी ने अस्वीकार किया। आया और भंगी के बीच झगड़ा हुआ। अंत मे आया ने यह कहते हुए उस बच्चे को जमीन पर दे मारा ''ले यह मरा हुआ''। जमीन पर वह बच्चा तड़प-तड़प कर मर गया। और उसके बाद ही उस भंगी ने उस मृत बालक के शव को स्वीकार किया।

एक बार एक परिपक्व गर्भ का मस्तक चूंषण पद्धति से अलग हो गया, और फिर आधे घंटे तक उसका धड़ श्वांस लेने के लिये तड़फता रहा।

दिन के अंत में आपरेशन थियेटर का सम्पूर्ण मानव कचरा, खचाखच भरी हुई बाल्टियों से निकालकर मृत्यु पायी हुई, अथवा

तड़फती हुई मनु संतानों का या तो दफना दिया जाता है। या फिर उन टुकड़ो को गटर में बहा दिया जाता है, या फिर भट्टी में डाल जला भुनाकर राख के ढ़ेर में परिवर्तित कर दिया जाता है। जिसमें सामान्य जनता की नजरों में यह पैशाचिक कृत्य...........ताण्डव लीला का आभास तक नहीं तो पाता।

क्या यही है हमारा धर्म क्या यही है हमारा कर्त्तव्य। क्या मानव धर्म की यही है परिभाषा, कि एक गर्भस्थ शिशु के साथ इतना क्रूरतक तरीका अपनाकर उसे मौत की नींद में सुला दिया जाय।

गर्भपात–धर्म वज्रपात

जिनागम में स्पष्ट कहा है कि यदि किसी नारी को गर्भ है। और वह अकस्मात किसी कारण से अपने आप ही गिर गया, तो जितने दिन या माह का वह गर्भ था. उतने ही समय का सूतक लगता है। फिर न तो वह भगवान की पूजा कर सकता है। न मां जिनवाणी का स्पर्श ही कर सकता और न ही दिगम्बर मुनियों के लिये आहारादि दान दे सकता है। यह तो अकस्मात गर्भ गिर जाने स ही धर्म पर वर्जवात होता है। लेकिन गर्भपात तो एक क्रूर सुनियोजित हत्या है, जिसके तहत नारी स्वयं अपने जीवन में धर्म से विमुख होना चाहती है। अपने धर्म पर वर्जपात करना चाहती है। एक अनबोली मासूम जान से खेलना चाहती है। यदि घर मं कोई प्राणी पारिवारिक कलह से अथवा अन्य कारणों से आत्म हत्या कर लेता है, जहर का सेवन कर लेता है। फांसी का फंदा चूम लेता है। तो उस घर में 6 माह का सूतक लग जाता है। उस घर का प्रत्येक सदस्य धर्म के सेव से हाथ धो लेता है। लेकिन जिस घर में गर्भपात पूर्वक क्रूरतक तरीके से सुनियोजित हत्या कराई जाती है, ध्यान रहे. उस घर में तो जीवन भर के लिये सूतक लग जाता है। **जिसने गर्भपात कराया उसके लिये आजीवन सूतक लग ही जाता है। उसके हाथ से मुनिराज आहार नहीं लेते। उसके हाथ का भोजन अतिथियों को भी नहीं**

देना चाहिये। वह महिला जिनेंद्र भ्रवान को गंधोदक भी स्पर्शित नहीं कर सकती। क्योकि जो सुनियोजित तरीके से एक पचेंद्रिय जीव की हत्या करा रही है। उसके ह्दय में दया, करुणा रह ही नहीं सकती। और जहाँ दया नहीं वहाँ धर्म भी नहीं होता। क्योंकि हमारे आचार्य भगवतों ने स्पष्ट लिखा है कि–**धर्मस्य मूलं दिया!**

अर्थात् धर्म की मूल दया है। और जिस मां ने दया धर्म ही छोड़ दिया। वह धर्मायनों में जाने का भी हक नहीं रखती। गर्भपात सचमुच में एक धर्म पर वज्रपात है। ऐसे कृत्य से यदि हम नहीं बचे, तोनरक की यात्रा करनी ही पड़ेगी।

मैं आज आप सभी से पूछना चाहता हूँ, आप सभी के ममतमयी ह्दय से एक उत्तर सुनना चाहता हूँ कि मेरे इस विषय का प्रतिपादन सुनकर क्या आपका दिल नहीं रोया? क्या तुम्हारे ह्दय में प्रेम का संचार नहीं हुआ? क्या उस मासूम के साथ इतना अत्याचार करना उचित है? क्या इसी प्रकार उस गर्भस्थ शिशु के साथ सलूक होना चाहिए। आप सभी के चेहरे की भाव भंगिमा और गीली आंखे मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर दे रही हैं। इसलिये अभी आपसे किसी भी प्रकार के नियम की चर्चा नहीं करुँगा। लेकिन हाँ प्रवचन के तुरंत बाद इस बात का नियम जरूर दूँगा।

मैं आपसे गर्भपात के तरीकों को संक्षिप्त में बतला रहा था। उस बालक के साथ ऐसा भीषण क्रूरतक आत्याचार करना हमारी आर्य संस्कृति को मर्माहित करना है। मैं आपको डा. बर्नाड नेथेन्सन के द्वारा बनाई गई डाक्युमेन्टरी फिल्म का भी परिचय देना चाहता हूँ।

समकालीन 17 जून, 85 के सन्डे आब्जब्र के अंक में धीरेन भगत की एबोर्सन को योग्य परिप्रेक्ष्य में रखने वाली ''ध सायलेन्ट स्क्री'' नाम की डाक्युमेन्टरी फिल्म की लिखित समालोचना समाज और शासकों की नींद उड़ाने वाली थीं। धीरेन भगत ने न्यूयार्क के गायनेकोजोजिस्ट डॉक्टर बर्नाड नेथेनसन की डॉक्युमेन्टरी फिल्म ''ध सायलेन्ट स्क्रीम'' गंगी चीख या शांत कोलाहल का जो वर्णन किया,

वह सभी को विचार मग्न करने वाला है। "एबोर्सन क्या हत्या है"? ऐसा बुनियादी प्रश्न भगत ने उपस्थित किया। अल्ट्रासाउन्ड टेकनिक के सहारे नेथेनसन ने इस फिल्म में बारह सप्ताह का गर्भ....... एबोसर्ष्न के समय किस ढंग से रहता है। उसकी स्पष्ट विज्युअल अभिव्यक्ति की है। अभी तक तो विज्ञान 16 सप्ताह के भ्रूण को टॉन्सील, फुंसी, तिल, मस्सा या नाखून से ज्यादा कुछ नहीं मानता था। लनेकिन उसी को "जिन्दा मनुष्य की जिन्दा जान है"। ऐसा "ध सायलेन्ट स्क्रीम" ने प्रमाण सहित सिद्ध कर दिखाया है। दर्शकों ने टी.वी पर देखा एबोर्सन के पहले 16 सप्ताह सक भ्रूण पूर्णरूपेण मनुष्य है।

डॉक्टर लोग वैज्ञानिक साधनों के द्वारा बालक के आस-पास के आवरण को पंक्चर कहते हैं। शिशु के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। मगर खोपड़ी वाला वह बड़ा हिस्सा बहुत बार समस्यायें खड़ी कर देता है। डॉक्टर उस भ्रूण के तैर रहे मस्तक को फोरसेप की सहयता से जोर से दबाकर तोड़ डालते हैं, और अंत में उस कोमल मस्तक के टुकड़े करके सक्सन पम्प द्वारा शोषण कर, चूसकर ही बाहन निकाल पाते हैं। डॉक्टर नेथेनस्न की फिल्म की पराकाष्ठा तो तब आती है, जब वह नन्हीं जान, नन्हाबालक, नन्हा शिशु या भ्रूण अपनी हत्या करने आ रहे, उन औजारों के प्रति अपनी नाजुक प्रतिक्रिया (रियेक्शन) दिखाता है। सक्सन पम्प जितना-जितना भ्रूण के नजदीक जाता है, उतनी-उतनी ही उस बालक की हृदय की ध ड़कने बढ़ती जाती हैं। जो उस शिशु की धड़कने सामान्यत: प्रतिमिनट 140 होती है,जैसे ही पम्प उसके एकदम करीब पहुँचता है, तब उस मासूम शिशु के हृदय की धड़कने बढ़कर प्रति मिनट 200 तक हो जाती है। वह नन्हीं जान समझती है, मेरे ऊपर घातक आक्रमण हो रहा है। रोम-रोम कांप जाता है। अपने जीवन दीप को बुझाने के लिये, अपनी जिंदगी से रुखसत होने के लिये, अपने जीवन की तबाही के लिये, आ रहे औजार से बचने के लिये, ओफ! वह मासूम

जिंदगी गर्भाशय की दीवारों की ओर तेजी से हटता है कि शायद इनसे बच जाऊँगा। वह मासूम क्या जाने? कि इन हत्यारों से बचना बहुत मुश्किल है। वह नुकीले घातक औजार उसके आस-पास की नलिका और उसका आवरण शस्त्रों से सच्छिद्र बन जाने के बाद उसको, उस मासूम शिशु को जो उस औजार को देखकर गर्भाशय की दीवारें से सट चुका है, झपटा कर पकड़ लेता है, और छिन्न-भिन्न कर उसका निंकंदन निकालने की प्रक्रिया का आरंभ हो जाता है।

हे ममतामयी माताओ! हे करुणा की मूर्ति! हे दया की निधान माँ! जब तुम इस क्रूरतक कार्य को रहा होती हो, उस समय तुम किसी हत्यारिन से कम नहीं होती। तुम्हें उस मासूम की चीख सुनाई नहीं देती। लेकिन ध्यान रखो, जब उस बालक के मस्तक को धड़ से झटके के साथ अलग कर दिया जाता है, तब वेदना, पीड़ा की वह दर्दनाक चीख उसके मुख से उठती है जिसको सुनने के लिये तुम्हारा मातृत्व तुम्हारी दया, तुम्हारी करुणा राजी नहीं है। वह वेदना की चीख ही कही जाती है-"सायलेन्ट स्क्रीम" (गूंगी चीख या शांत कोलाहल) और फिर उस कठिन खोपड़ी को फोरसेप से दबाकर तोड़कर कचूमर निकाल दिया जाता है।

एक रक्षण विहीन (डिफेंसलेस), एक मासूम गूंगी जुबान के साथ जो यह क्रूरतक तरीका अपनाया जाता है। यदि व्यक्ति एक बार उसके साथ घट रहे इस हादसे को अपनी नंगी आखों से देख ले तो घिग्घी, बंध जाती है। जब यही फिल्म अमेरिका के पूर्व राष्ट्पति ज्यॉर्ज बुश ने देखी तो तो आंखों से आंसू बह निकले। उन्होंने भी इस गर्भपात का खुलकर विरोध किया। कभी आपने विचार किया अपनी कोख में, अपने गर्भ में आये हुए शिशु के रूप में पता नहीं, कोई महावीर, कोई राम, कोई कृष्ण ही जन्म लेना चाहता हो, इस समूचे प्राणी मात्र का रक्षक, प्राणी मात्र का पालन हारा आपके गर्भ से पैदा होने वाला हो। क्या पता आपको किस महापुरुष की माता का गौरव

प्रदान करने वाला शिशु आपके गर्भ में आया हो। काश,..............
....

हे माताओ! आप इतना विचार कर पाते। इस धरती पर जितने भी महापुरुष पैदा हुए हैं, वे कहीं अलग से उत्पन्न नहीं हुये, अपितु आपके ही गर्भ से जन्म लेकर इस धरती के मसीहा बने हैं। आज के दिन श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। कंस की क्रूरता को चुनौती देने वाला, एक उसका अंत करने वाला इस वसुंधरा पर जन्मा था। श्री कृष्ण के द्वारा एक कंस का अंत तो हो गया, लेकिन आज कंस का वंश अभी तक जीवंत है। कंस का वंश सम्पूर्ण मानवता को कलंकित कर रहा है। वर्तमान की यह क्रूर प्रवृति तो कंस के नाम पर भी कलंक है। आज का मानव तो कंस से भी ज्यादा क्रूर एवं भयानक हो चुका है। इसलिये अब घर-घर में महापरुष का जन्म होना चाहिये।

गर्भपात-दरिद्रता को निमंत्रण

संसार के दु:खी प्राणियों को देखकर, उनके कष्टों, उनकी पीड़ाओं को देखकर एक बार लक्ष्मी ने भी अवतरित होने के विषय में सोचा। लक्ष्मी ने अपने स्वामी से कहा हे प्रभु-मैं भी इस धरती के समस्त दु:खी प्राणियों को दु:ख मुक्त करना चाहती हूँ। विष्णु जी ने कहा-देवी आपका विचार तो बहुत सुंदर है, लेकिन फलीभूत कितना होगा? ये नहीं कहा जा सकता। लक्ष्मी ने कहा-जब आप दूसरो के कष्ट हरण करने के लिये जन्म ले सकते हैं, तो क्या मैं नहीं ले सकती। विष्णु जी ने कहा देवी यह कलयुग चल रह है। इसमं हैवानियत को कोई पैमाना नहीं है। वार्ता चल ही रही थी, कि चित्रगुप्त वहाँ से गुजरे। जब उन्होंने यह चर्चा सुनी, तो बोले-हे माता! हर माँ की कोख से जन्म लेना तो अत्यंत दुष्कर है। मेरे पास सभी का लेखा जोखा है। अत: आप उसी के अनुसार यदि इस धरती पर जन्म लें तो उचित होगा।

लक्ष्मी ने कहा-जब दूसरों की पीड़ा दूर करने का भाव है, तो उसमें भेदभाव कैसा? भी प्राणी के प्रति भेदभाव नहीं होना चाहिए। और लक्ष्मी जी ने भी विचार कर लिया, प्रण कर लिया कि मैं सभी के कष्ट को दूर करूँगी।

हे माताओ! आपके गर्भ में आने वाली कन्या किसी लक्ष्मी से कम नहीं है। आपके गर्भ से साक्षात् लक्ष्मी जन्म लेना चाहती है। आपके कष्टों को दूर करना चाहती है। इस बात का ध्यान रखना, जो भी अपने जीवन में द्ररिदता का जीवन जीने के लिये मजबूर हैं, तो उन्होंने कभी हिंसा जैसे किसी कार्य को किया होगा। जिस घर में गर्भपात का क्रूरतक कार्य होता है, उस घर में कभी लक्ष्मी नहीं हो सकती। और यदि लक्ष्मी है, तो आपके द्वारा ऐसे कृत्य के करने पर वह आपके घर में ठहर नहीं सकती है। लक्ष्मी दयावान और सत्यवान के घर में निवास करती है। ''दया और सत्य का व्यवहार ही लक्ष्मी के आगमन का द्वार है।'' जिस व्यक्ति के जीवन से दया और सत्य उठ जाता है, जिस व्यक्ति के आचरण से दया और सत्य उठ जाता है। उस व्यक्ति के जीवन से लक्ष्मी का साया भी उठ जाता है। यदि आप अपने जीवन को सुखमय जीना चाहते हैं। तो दयावतन्त होकर के जियें। जिससे आपके घर में लक्ष्मी का साम्राज्य रहे। तो लक्ष्मी ने साचा चलो सभी के कष्टों को दूर कर दें। लेकिन जैसे ही कोई गर्भ में कन्या के रूप में लक्ष्मी आई, कि इन हत्यारिन माताओं ने अल्ट्रासाउण्ड, सोनोग्राफी के द्वारा चेक कराकर उसको गर्भ में दर्दनाक मौत में तब्दील कर दिया।

लक्ष्मी ने पुन:-पुन: जन्म लेने का विचार किया, लेकिन उसको जन्म लेने के पहले ही मौत के घाट उतार दिया गया। लक्ष्मी तो आपके दु:ख दूर करने आई थी, लेकिन आपने अपने ही द्वारा लक्ष्मी को दूर कर दिया। इसलिये जिसे घर में गर्भपात होता है, ध्यान रखना उस घर में दरिद्रता को निमंत्रण दिया जा रहा है। वासना की आग को शांत करने के लिये दरिद्रता को पुकारा जा रहा है। यह हमारे

जीवन की सबसे भयानक और (केरेक्टरलेस) अवस्था है। और जिस घर में लक्ष्मी को ठुकराया गया, वहाँ कभी विष्णु जी अवतरित न हो पयेंगे। जिस गर्भ में गर्भपात का कार्य हुआ है। यदि उस गर्भ से कोई बालक भी जन्म लेगा, तो ध्यान रखना उसके संस्कार भी हिंसक ही होंगे। क्योंकि वह बालक गर्भ के कत्लखाने से जन्म ले रहा है। ऐसे गर्भ से राम, कृष्ण, महावीर तो दूर रहे, कंस, रावण, और औरंगजेब, तैमूरलंग जैसी क्रूर आत्मायें ही पैदा होंगी। ऐसे माता-पिता का जीवन नरक हो जायेगा। इसयि इस गर्भपात जैसे घिनौने कार्यमं आपको विचार जरूर करना होगा। हर माँ को कौशल्या और त्रिशला बनना होगा। हर माँ को मरुदेवी और अंजना बनना होगा।

मैं कभी-कभी विचार करता हूँ कि आखिर तीर्थंकर जैसे महापुरुष जब इस धरती पर जन्म लेने के लिये माँ की कोख में आते हैं, तो आखिर गर्भ शोधन या सुरक्षा के लिये देवियाँ की आवश्यकता क्यों होती है? आखिर देवियों का प्रस्तुतीकरण क्यो किया जाता है? सौधर्मेन्द्र ऐसा क्यों करता है? तो मैं तो इतना ही साूचता हूँ कि ऐसे महापुष का जन्म लेने के लिये कहीं कोई ऐसी क्रूर गर्भपात जैसी क्रिया न हो जाय। शायद इसी सुरक्षा के लिये देवियाँ आती हैं, यद्यपि तीर्थंकर बालक का इतना तीव्र पुण्य होता है कि इस प्रकार की कोई अप्रिय घटना नही हो सकती। वह माँ भी अपने जीवन मं ब्रह्मचर्य की साधना में रत रहती है। पर ब्रह्म को अपनी कोख से जन्म देने वालर मां पूर्व-पूर्व जन्मों में भी ब्रह्मचर्य का पालन करतीं हैं। उसव ब्रह्मचर्य का ही परिणाम होता है, कि भावी परम ब्रह्म जन्म लेता है अर्थात् तीर्थंकर की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इसलिये माँ बनना भी किसी अर्थे में साधना का फल है अर्थात् अपन जीवन में साध ना के द्वारा ही माँ बना जाता है। जो माताऐं माँ बनने के बाद अपने गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा करतीं हैं। उसकी सूेवा सुश्रुषा करतीं है। उसे महान आत्मा बनाने के लिये स्वयं साधना के द्वार से गुजरतीं हैं अर्थात् गर्भस्थ शिशु गर्भ से ही अपने जीवन में संस्कार ग्रहण करने

लगता है। इसीलिए वे माताएँ गर्भाधान के काल में सत्पुरुषों के आख्यान चरित्र पढ़ती है। कोई नोबेल (उपन्यास) अश्लील पुस्तकें नहीं पढ़ती। टी.वी. आदि नहीं देखतीं। सदाचार पूर्ण जीवन, सादगी के साथ व्यतीत करती हैं। मन में सदा परमात्मा का स्मरण करतीं हैं। किसी से लड़ती-झगड़ती नहीं हैं। क्योंकि जैसा माँ का आचरण होगा, वैसा ही वह गर्भस्थ शिशु भी अपने स्मरण में, स्मृति में, याद्दाशत में रख लेगा।

गर्भस्थ शिशु की भी होती है याद्दाश्त

अभी तक गभस्थ शिशु की याद्दाश्त विषयक पौराणिक आख्यान तो बहुत मिले, लेकिन अब इस बात को, कि ''गर्भसी शिशु की भी होती है याद्दाश्त'' वर्तमान में हालैंड के वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर दिखाया है। जिससे वैज्ञानिकों के लिये कई चौंकाने वाले नतीजे मिले हैं।

अभी तक तो हम यही पढ़ते आये हैं कि अर्जुन की पत्नि सुभद्रा के गर्भ में जो बालक अभिमन्यु था। जब माँ को नींद नहीं आ रही थी तो अर्जुन सुभद्रा को रात्रि में चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विधि सुनाना प्रारंभ कर दिया। चक्रव्यूह में कैसे प्रवेश किया जाता है? यह कथानक सुनने के बाद सुभद्रा को नींद आ गई जिस कारण वह चक्रव्यूह से निकलने की विधि न जान सकी। अभिमन्यु जो सुभद्रा के गर्भ में था, उसने गर्भ में ही चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विधि सीख ली, लेकिन माँ को नींद आ जाने से वह चक्रव्यूह से निकलने किी विधि न जान सका। यही कारण है कि अभिमन्यु अर्जुन की अनुपस्थिति में चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर गया, लेकिन निकलने कि विधि न जानने से मारा गया। यही गर्भस्थ शिशु की याद्दाश्त होती है विषयक शोध 30 सितम्बर 2000 अमर उजाला में प्रकाशित किया गया हैं।

किसी भी माँ से पूछिये तभी आपको पता चलेगा, कि गर्भ मे

हिलते डुलते बच्चे का अहसास कैसा लगता है? लेकिन किसी भी माँ से अगर उस अहसास कैसा लगता है? लेकिन किसी भी माँ से अगर उस अहसास को शब्दों में बयान करने के लिये कहा जाये, तो उसके लिये ऐसा करना नामुमकिन तो नहीं, लेकिन मुश्किल जरूर होगा। कारण स्पष्ट है। अहसास को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। गर्भ में पल रहे बच्चे की प्रतिक्रिया के आधार पर वैज्ञानिकों का कहना है, बच्चे जब गर्भ में आते हैं, तभी वे अपनी याद्दाशत का इस्तेमाल करना सीख जाते हैं यह कोई ख्याली बात नहीं है। वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों से यह साबित कर दिया है।

इंग्लैंड की साप्ताहिक विज्ञान पत्रिका 'दि लैसेट के कल(29 सितम्बर) प्रकाशित होने वाले अंक में छपी रिपोर्ट के अनुसार कैथलिन वान हेटरेन की अगुवाई में हालैंड के वैज्ञानिकों ने गर्भ में पल रह 30-40 हफ्ते के 25 बच्चों पर एक अनोखा प्रयोग किय। इसके तहत गर्भवती महिलाओं के पेट पर हर 30 सैकेंड के बाद कुछ देर के लिये उत्तेजना पैदा करने वाले यंत्र का प्रयोग किया गया। इस प्रयोग को कई दिन तक हर इस मिनट बाद दुहराया गया। लेकिन किसी एक गर्भवती महिला पर एक दिन में अधिकतम 24 बार प्रयोग किया गया। गर्भवती महिलाओं के पेट पर उत्तेजना यंत्र के प्रयोग से बच्चे की प्रतिक्रिया को स्कैनर पर देखकर वैज्ञानिकों को कई चौंकान वाले नतीजे मिले हैं।

इस प्रयोग में पाया गया कि कुछ बच्चे उत्तेजना यंत्र के स्पंदन को महसूस करने के कुछ सैकेंड के अंदर ही हिलते-डुलते नजर आये। इस सकारात्मक प्रतिक्रिया के तौर पर लिया गया। जबकि कुछ बच्चे चार-बार स्पंदन करने के बाद भी नहीं हिले-डुले। इससे पता चला, कि यह बच्चे उस स्पंदन से अच्छी तरह से परिचित हो चुके थे, और यही कारण था उन्होंने कोई हरकत नहीं की। वैज्ञानिकों ने पाया कि गर्भ में पल रहे बच्चे कम से कम 10 मिनिट और अधिक से अधिक 24 घंटे बाद स्पंदन से भली भांति परिचित हो जाते हैं।

इसका अर्थ यह हुआ, कि गर्भस्थ बच्चों को अपनी याद्दाश्त को पुख्ता करने में कम से कम 10 मिनिट और अधिक से अधिक 24 घंटे का समय लगता है। (पैरिस-29 सितम्बर)

माँ-किसी साध्वी से कम नहीं

इसीलिये हर माँ को चाहिए कि वह गर्भकाल के दौरान अपने जीवन को सादगीपूर्ण, सदाचरण के साथ व्यतीतकर उस गर्भस्थ बालक को धार्मिक, नैतिक संस्कारों से संस्कारित करें। हर समय प्रेम, करुणा और दया के भाव रखें। ऐसी माँ भी किसी साध्वी से कम ने हागी। जैसे कोई साध्वी अपने समग्र जीवन में करुणा, दया, प्रेम, वात्सल्य आदि गुणें से सहित होती है। यदि वही गुण गर्भकाल के दौरान एक माँ के आचरण में उतरते हैं तो वह माँ भी किसी साध्वी से कम नहीं होती। अत: प्रत्येक माँ को चाहिए कि वह अपने गर्भ में पल रहे शिशु के प्रति दया भाव, करुणा भाव, प्रेमभाव रखे। उसके साथ क्रूरतम एवं निंदनीय व्यवहार न करें। अन्यथा उसका परिणाम आपको ही भुगतना होगा।

नारी का परिचय माँ बनने से हुआ करता है। हर पत्नी की यह इच्छा, यह कामना, यह भावना होती है कि वह माँ बने लेकिन जो स्त्रियाँ अपने जीवन में गभस्थ शिशु को गर्भपात के माध्यम से मौत के घट उतार देती हैं। कितने ही बार वे महिलायें पुन: माँ बनने के लायक नहीं रहतीं। अथवा **महिलायें बांझ होती हैं। उन्होंने अपने पूर्व जन्मों में कभी ऐसे गर्भपात जैसे निकृष्ट कार्य को किया होगा, कराया होगा, या करने वाले की अनुमोदना की होगी। कराया होगा, या करने वाले की अनुमोदना की होगी। यह कारण है कि आज उन्हे स्त्री सुख तो मिला, लेकिन पुत्र सुख, माँ कहने वाला नन्हा सा शिशु का सुख नहीं मिला। जो मातायें बच्चों को देखकर प्रसन्न हो जाती हैं। चाहे वे अपने हों या**

पड़ोसी के। जिठानी के हों या देवरानी के। बच्चों के प्रति जिनका प्रेम भाव रहता है। चाहे वह तिर्यंच के भी गाय, कुतिया, के भी क्यों न हो। वे महिलायें मातृत्व सुख से वंचित नहीं होती। और इस गर्भपात जैसे निकृष्टतम, क्रूरतमक कार्य को जहाँ महिलायें अपने सौंदर्य रक्षा, देह यष्टि की सुरक्षा जैसे बहाने खोजकर उस मासूम पर कहर ढाती हैं, तो वहीं पुरुषवर्ग भी कभी-कभी पीछे नहीं रहता। कितने ही बार पुरुष लोग उन महिलाओं के लिये, अनिच्छित बालकों के पति गर्भपात कराने के लिये प्रेरणा देते हैं। प्रेरित करते हैं। या बाध्य करते हैं। स्त्री को भोग्य वस्तु समझने वाले ऐसे नराधम, दरिंदे ध्यान आगामी भवों ने नपुंसक और हिजड़ो में पैदा होंगे। अथवा जिस प्रकार तुमने उस मासूम के साथ वह कार्य करवाया, तुम्हें भी जन्म लेने के पूर्व मौत की नींद मं सुला दिया जावेगा। ऐस पुरुष अपने पुरुषत्व को नष्ट कर रहे हैं। और इन्हें भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

हे माताओ! आज आप अपनी ही स्त्री जाति को नष्ट कर रहीं। स्वयं तुम्हारे द्वारा स्त्री जाति को समाप्त किया जा रहा है। यदि इसी प्रकार से यह गर्भपात का कार्य चलता रहा,तो आगामी जीवन बड़ा भयानक हो जायेगा। आज वर्तमान के आकड़े हमारे लिये चौंकाने वाले हैं जिस पर हस स्त्री पुरुष को विचार करना होगा।

कादम्बनी, दिसंबर 99 में एक लेख ''पुरुषों की तुलना में घट रही है स्त्रियों की संख्या'' नाम से प्रकाशित हुआ था। जिसमें कुछ आंकड़े प्रस्तुत किये गये थे। उसमें कहा गया था, कि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या लगातार घट रही है। जब भारत की 20 वीं सदी दहलीज पर कदम रखा था तब प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 972 थी। अब जब वह 21 वीं सदी में प्रवेश करेगा, तब वह संख्या 920 या उससे कम होगी। जनगणना की शब्दावली में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात (मगत्जपव) कहा जाता है।

भारत में लिंग अनुपात

वर्ष	*प्रति एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या*
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	929
2001	920 (अनुमानित)

प्रो. अमर्त्य सेन का मानना है कि 1991 में लिंग अनुपात का आंकड़ा 929 न रहा होगा, क्योंकि उस समय जनगणना में जीवित स्त्रियों की जितनी संख्या दर्शायी गयी है, दरअसल उतनी थी नहीं। बल्कि वह 10 करोड़ कम थी। लेकिन अगर 929 की संख्या को सही भी मान लिया जाय तो देश भर में तमाम ऐसे हिस्सों की भरमार है जहाँ इससे काफी कम लिंग अनुपात है। जैसे पंजाब में लिंग अनुपात 750, ग्रामीण हिरयाणा में 700, उत्तर प्रदेश में 882 हैं।

आज लड़कों की अपेक्षा लड़कियों के प्रति जो भेदभाव रखा जाता है। लड़की को हीन और लड़कों को श्रेष्ठ समझा जाता है। कन्या जन्म को परिवार में स्वागत योग्य नहीं समझा जाता, तो इसमें कुछ हमारी संकीर्ण मनोवृत्ति, अन्ध विश्वास, अथवा अंधी परंपरायें जुड़ी होती हैं। जैसे वंश परंपरा का निर्वाह पुत्र से होता है। मृत माता-पिता का दाह संस्कार करने के लिये मुखाग्नि पुत्र देता है। पितृ

ऋरण से उऋण होने के लिये पुरुष को पुत्र का पिता बनना आवश्यक है। पितरों को पिंडदान पुत्र ही दे सकता है। पुत्र तारक तथा उद्धारक होता है। पुत्र र्स्वा की सीढ़ी है। पुत्र बुढ़ापे का सहारा है ये सब बातें भारतीय दंपती के मन में कूट-कूटकर भरी हुई हैं उनमें पुत्र प्राप्ति के लिये जुनून होता है। उसके लिये उचित-अनुचित का ध्यान किये बगैर न जाने क्या-क्या और कितने-कितने उपाय करते हैं, लोग। यानी पुत्र प्राप्ति के लिए के किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। जब तक हमारे यहाँ कन्या अभागी समझी जायेगी, उसका जन्म अशुभ का सूचक माना जायेगा, तब तक लिंग अनुपात का संतुलन ठीक नहीं रह सकता है।

हे माताओ! अपने द्वारा ही अपनी जाति पर अत्याचार करना तुम्हें कहाँ तक उचित है। लड़की के साथ यह भेदभाव पूर्ण रवैया तुम्हारे जीवन से सुखद नहीं बना सकता। हमारे देश में कन्या को मंगल कहा जाता है। और आप अपने घर में हाने वाले मंगल को अमंगल में बदलने को तैयार हो। आज तक अभी तक किसी भी शास्त्र में, कि भी धर्म में पुत्र को मंगल नहीं कहा, लेकिन पुत्री को, कन्या को मंगल जरूर कहा है। आज के इस भौतिकवादी, विलासी युग में अपने धर्म से खिलवाड़ करना कितना घातक होगा, कभी इस पर विचार नहीं किया। जिस तरह तुम लिंग परीक्षण कराकर उन अबोध बालिका पर अत्याचार करने को तैयार हो जाते हो। **कभी इस बात पर भी विचार करो को डॉक्टर कोई सत्यवादी नहीं है, जिस पर तुम विश्वार कर लेते हो, कि वह तुम्हारे गर्भ मं लड़की को ही गर्भपात करेगा, और कितने ही बार डॉक्टर भी पैसे की लालच में लड़के को लड़की बतलाकर गर्भपात करते रहते हैं।**

आज वर्तमान में तो गर्भपात एक कानूनन अपराध है, कानून द्वारा इस पर रोक लग गयी है। फिर भी आज समाज में कन्या भ्रूण हत्या का क्रूर सिलसिला किसी न सिकी रूप में चोरी छिपे अवश्य

जारी है। इसका जोरदार सबूत घटता हुआ लिंग अनुपात है। कन्या भ्रूण हत्या के इरादे से किये जाने वाले गर्भस्थ शिशु के लिंग निध रिण परीक्षण पर जब तक कानूनी तौर पर रोक नहीं लगी थी, तब वह जिस खतरनाक स्तर पर पहुँच चुका था उसका आभास निम्नलिखित तालिका से हाता है।

भारत में लिंग निर्धारण परीक्षण और गर्भपात द्वारा कन्या भ्रूणों का समापन अवधि लिंग निर्धारण परीक्षण और गर्भपात के जरिये कन्या भ्रूणों की हत्या–

1978-82	लिंग निर्धारण के बाद 78,000 के करीब कन्या भ्रूणें का गर्भपात हत्या।
1986-87	30,000-40,000 कन्या भ्रूणों की हत्या।
1984	मुंबई महानगर में कुल 8000 गर्भपात कराये गये। उनमें 99 प्रतिशत से ज्यादा कन्या भ्रूण थे।
1987	गर्भ प्रकाशन विरोधी मंच की रिपोर्ट के अनुसार बड़ौदा शहर में 2,400 गर्भस्थ शिशु लिंग निर्धारण परीसर हुये।
1987-88	दिल्ली के 7 क्लीनिकों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 13,000 गर्भस्थ शिशु लिंग निर्धारण परीक्षण किये गये।

स्रोत– एमनिओसंटिसिस पब्लिक पॉलिसी डिवीजन, वालंटरी हैल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया 1991)

ये मात्र आंकड़े ही नहीं आपकी चारित्र हीनता के प्रमाण हैं। मासूम शिशु के प्रति किये गये अत्याचार के सुबूत हैं। मैं आज आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ। कि आप अपने अंदर की ममता, करुणा, दया, प्रेम, वात्सल्य को पुनः जागृत करें। एवं इस बात का संकल्प लें, कि हम अपने जीवन में कभी गर्भपात नहीं करावेंगे। गर्भ के अंदर पल रहे उस मासूम नन्हीं जान पर इतनी क्रूरता को नहीं होने देंगे।

जो भी जीव इस धरती पर जन्म लेते हैं। सब अपने-अपने भाग्य को लेकर आते हैं। लेकिन हमें उनके भाग्य के साथ ऐसा खिलवाड़

करने का कोई हक नहीं है। आप सभी ने गर्भपात की सारी विधियाँ को अच्छी तरह से सुना हैं। सभी के अंदर से करुणा की आवाज उठी होगी। जिसने भी अपने जीवन में अभी तक कोई भी गर्भपात करवाया होगा। उनको आत्मग्लानि हुई होगी। लेकिन मैं इस आज यहीं तक सीमित नहीं रखना चाहता। आज आप सभी के लिये संकल्प देना चाहता हूँ कि हम भगवान महावीर की अहिंसा के अनुयायी हैं, और इससे जो भी अज्ञानता के वशीभूत अभी तक काले कारनामे हो गये, भूल हो गई उनके प्रति आत्मग्लानि से भरते हुए भविष्य में कभी भ्झी गर्भपात न करवायेंगे न करवाने के लिये किसी को भी प्रेरण देंगें । यह नियम सबसे पहले पुरुषों को लेना हैं। महिलायें, बहिनें सभी इस संकल्प को लेकर संकल्पित होंगे।

आप सभी ने आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसरं पर यह संकल्प लेकर सम्पूर्ण मानवता को उच्चता प्रदान की है। अपनी ममता, समता एवं करुणा को पुर्नजीवित करने व नारी जाति के विकास में लिया गया संकल्प आप सभी को सुख, शांति, आनंद, प्रदान करें। इसी भावना के साथ।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

●